RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 9 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 7 अगस्त 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

जोहारी बोली-भाषा
जगदीश सिंह बृजवाल 'दुमरियाल'

चौमास खरियौट

चौमास खरियौट खनरीने,
आचे म्यर कन बसि।
कौके घरबार, कौके कुरबौर
कौके ज्यान जान बसि
खनियौर भनियौर, खखलभन
वरितरोप-परीतोप हन बसि।
चौमास खरियौट .....
द्वी-तीन मैन पहारबन
आफतक पहार ले टुटन बसि
गा्र-धार नैछ थौर-थ्यूम
हुदरि-हादरि, टुटि-टैटि
चौसिया कस हन बसि.
चौमास खरियौट .....
झुमि-झुमिया पैनि लैगि
रोपै ग्आर ले सजन बसि
कचियारबन फ्वतरि-फातरि
गीत-बदार, हॅसी-मजाक
दा्द-बो, ले कन बसि।
चौमास खरियौट .....
संचपंच पहार हेगे
खजबजि-खाजबजि, ठूल ढुंङ
धरति चऽर मनि कैबर
आ्ब बैकि हुदरन बसि
कौके लीजे आफत बनिबेर
चौमास ऐंजि चमकन बसि।
चौमास खरियौट .....
गा्र-गरंद, स्वीं-स्वी, भ्वीं-भ्वीं
कुराक तलीन हन बसि
जतरोप भे घरम-चरम
उतरोप कला उजरन बसि
इहै कनन काल-चौमास
आंखाक सामनि दीखीन बसि।
चौमास खरियौट .....
पल्ली जमनाक चौमास जब
सतझर-अठझर हंछी तब
वस ढबक के नी हंछी
जस आज हने सब
यस आफत कबै नी ऐ
कस चऽल आज बिगरी यस।
चौमास खरियौट खनरीने,
आचे म्यर कन बसि।

(भावार्थ- वर्षा ऋतु के विषय में आज दादी के मुँह से निकलता शब्द अजीबोगरीब, अचरज भरा लगता है। आज के वर्षाकाल में पहाड़ों की स्थिति, चारों ओर उलट-पुलट, आफत की बारिश से जन-धन की भी बहुत हानी हो रही हैं।

पहाड़ के दो-तीन महीने जून माह के दुसरे पखवाड़े से सितम्बर के प्रथम पखवाड़े तक पहाड़ों पर

शेष पृष्ठ 5 पर

सीएम धामी ने कहा

नेपाल तक हो मानसखण्ड परियोजना का विकास

कार्यालय प्रतिनिधि

कुमाऊँ के लिये तैयार की जा रही मानसखण्ड मन्दिर माला मिशन का विस्तार नेपाल तक किया जाए तो यहाँ पर्यटन और रोजगार के अवसर बढ़ सकते हैं। नेपाल से सीएम को मिलने देहरादून आए प्रतिनिधिमण्ड से भेंट के दौर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि भारत और नेपाल के लोगों में काफी समानता है। राज्य का बड़ा क्षेत्र नेपाल की सीमा से लगा हुआ है। भारत और नेपाल की चुनौतियां भी समान हैं। उन्होंने कहा कि नेपाल विकास के लिये जो भी सहयोग कहेगा राज्य की ओर से हरसम्भव मदद की जाएगी। सीएम ने कहा उत्तराखण्ड में मानसखण्ड मन्दिरमाला मिशन में पहले चरण में 16 मन्दिरों को जोड़ा जा रहा है। नेपाल का भी काफी क्षेत्र मानसखण्ड में आता है। मिशन के तहत कार्य हो तो पर्यटन एवं तीर्थाटन के लिये राज्य में आने वाले लोगों का रूझान नेपाल की ओर भी बढ़ेगा।

नेपाल से आए प्रतिनिधि मण्डल में पम्पा भूसाल, रामेश्वर राय यादव, सत्या पहाड़ी, सुरेश कुमार राय, चक्रमणि खनल बलदेव शामिल थे। भाजपा पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट, महामत्री आदित्य कोठारी, मेयर सुनील उनियाल भी उपस्थित थे।

भारी बारिश ने मचाई आफत धारचूला में बोल्डर से नुकसान

पांखू में भवन क्षतिग्रस्त, सेरागाड़ पुलिया बह चुकी

पि.हि. प्रतिनिधि

भारी बारिश ने पूरे उत्तराखण्ड में आफत मचाई है लेकिन सीमान्त क्षेत्र में जिस प्रकार से नुकसान हो रहा है वह बहुत दिनों तक दु:ख देने वाला है। पुंगराऊ घाटी में सेरागाड़ पुलिया बह चुकी है। पांखू के बैरा जुब्बर से बौगाड़ तक प्रधानमंत्री सड़क योजना की ओर से बनाई गई सीमेंट की पुलिया टूटने से कई ग्रामों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। पांखू के जड़िया गाँव में निर्धन महिला चन्द्रा देवी का मकान भी ध्वस्त हो गया। सामाजिक कार्यकर्ता दीपक कार्की ने प्रशासन से वार्ता कर पीड़ित को मुआवजे की मांग की है।

भारी बारिश से धारचूला क्षेत्र में काफी नुकसान उठाना पड़ा है। तपोवन के एनएचपीसी गेट के पास खोतिला निवासी चिन्तामणि भट्ट के मकान पर बोल्डर गिरने से नुकसान हुआ है। भवन स्वामी ने सड़क कटिंग कर रही कार्यदायी संस्था हिलवेज पर लापरवाही का आरोप लगाया है। कहा इनसे सड़क किनारे अटके मलबा और बोल्डर हटाने को कहा गया था लेकिन इनकी लापरवाही से बोल्डर-मलबा नहीं हट सका जिससे उन्हें नुकसान उठाना पड़ा है।

मौसम की मार से चीन को जोड़ने वाली सड़क घट्टाबगड़-लिपुलेख, जौलजीवी-मुनस्यारी, तवाघाट-सोबला, रामगंगापुल-मुनस्यारी, पिथौरागढ़ तवाघाट, तवाघाट-थानीधार, बटगल-सेलीपाक में भारी मलबा आने से परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। डीडीहाट-सीराकोट सड़क पर भी बोल्डर आने से दिक्कत हो रही है।

विपक्ष 'इंडिया' गुट के रूप में हाबी

भाजपा संगठनात्मक ढांचे को सुदृढ़ करते हुए तैयार

पि.हि. प्रतिनिधि

लोकसभा चुनाव को लेकर देशभर में विपक्ष जिस 'इंडिया' गुट बनाकर हमलावर हो चुका है, वही स्कीम कांग्रेस ने उत्तराखण्ड में शुरु कर दी है। कांग्रेस के दिग्गज नेता हरीश रावत अन्य के साथ मिलकर लगातार भाजपा से सवाल कर रहे हैं। भाजपा नेता राज्यसभा सांसद नरेश बंसल द्वारा 'इंडिया' शब्द हटाने के बयान का भी चारों ओर विरोध किया है। कहा कि भाजपा सरकार स्टार्ट अप इंडिा, मेक इन इंडिया, खेलों इंडिया जैसे कई अभियान शुरु कर चुकी लेकिन अन्य के द्वारा 'इंडिया' करने पर उबल रही है। दूसरी ओर भाजपा अपने संगठनात्मक ढांचे को सृदृढ़ करते हुए पूरी तैयारी में है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी में राज्यसभा सांसद नरेश बंसल को सह कोषाध्यक्ष इसी क्रम में बनाया गया है।

नवनिर्माण हेतु मर्तोली में नन्दा के भक्तगण युद्धस्तर पर जुटे हैं

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

जोहार। सीमान्त क्षेत्र मर्तोली में हिमालयी माँ नन्दा के मन्दिर के भव्य नवनिर्माण हेतु भक्तगण युद्धस्तर पर जुटे हुए हैं। बरसात के इस मौसम में भी परवाह किये बगैर मन्दिर ट्रस्ट के पदाधिकारी और श्रद्धालु पूरे उत्साह के साथ जुटे हैं। उल्लेखनीय है कि मर्तोली की नन्दामाई को उत्तराखण्ड के पाँचवे धाम के रूप में विकसित करने का लक्ष्य लेकर कार्य किया जा रहा है। मर्तोलिया बन्धु लम्बे समय से इस अभियान में जुटे हुए हैं। सीमान्त क्षेत्र मर्तोली के तमाम जगहों पर बसे मतोलियाओं और इनके इष्ट-मित्र इस पुनीत कार्य में सहयोग कर रहे हैं। अपील भी की जा रही है कि इस अभियान में किसी प्रकार की आर्थिक व अन्य कमी न हो इसके लिये सभी सहयोगी बनें। ध्यैनियों के द्वारा भी सहयोग में बढ़चढ़ कर सहयोग दिया जा रहा है।

बताते चलें इन दिनों हिमालयी माँ नन्दा देवी मर्तोली के मन्दिर निर्माण हेतु मर्तोली गये वरिष्ठ जन चन्द्र सिंह मर्तोलिया, पुरमल सिंह मर्तोलिया, प्रेम सिंह मर्तोलिया, रघुराथ सिंह मर्तोलिया गये हुए हैं। हल्द्वानी से मुनस्यारी/मर्तोली सामान भेजने सम्बन्धी कार्य भूपाल सिंह मर्तोलिया, धाम सिंह मर्तोलिया कर रहे हैं। मुनस्यारी से मर्तोली सामान भेजने की व्यवस्था के लिये धापा में केयरटेकर के रूप में जगदीश सिंह ढाकटी हैं।

लिपुलेख से कैलास पर्वत दर्शन की तैयारी

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

पिथौरागढ़। पर्यटकों को लिपुलेख से कैलास पर्वत दर्शन कराने की तैयारी पर्यटन विभाग ने शुरु कर दी है। ऐसे में 17500 फीट की ऊँचाई से कैलास के दर्शन हो सकेंगे। पर्यटन विभाग ने स्थानीय लोगों की मदद से कैलास के दर्शन भारतीय क्षेत्र से कराने का निर्णय लिया है। इसके लिये लिपुलेख से 1.8 किमी की खड़ी चढ़ाई पार कर कैलास पर्वत के दर्शन होते हैं। इस स्थान से कैलास पर्वती की दूरी 50 किमी है। पर्यटन अधिकारी कीर्ति चन्द्र आर्या ने बताया है कि भारतीय क्षेत्र से श्रद्धालुओं को कैलास पर्वत के दर्शन कराने की तैयारी है, इसके लिये रास्ते को विकसित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि कोरोना काल से पूर्व इस प्रकार की तैयारी होने लगी थी लेकिन कोरोनाा काल और उसके बाद चीन के साथ सीमा विवाद पर यह कार्य थमा हुआ था।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

पहाड़ की स्वास्थ्य सेवाएं मजाक बन चुकी हैं

विगत दिवस धारचूला से छः किमी आगे दोबाट में हुई दुर्घटना में ग्वालदम निवासी कैलाश सिंह पुत्र करन सिंह बुरी तरह से घायल हो गया। घायल को धारचूला अस्पताल लाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें पिथौरागढ़ के लिये रेफर कर दिया गया लेकिन ऐम्बुलेंस न होने के कारण घायल तड़पता रहा। कई घंटे इन्तजार के बाद उनके परिजन जैसे-तैसे अपने साधन से ले जाने लगे, अस्कोट पहुँचने पर उन्हें १०८ वाहन उपलब्ध हो पाया। मौत से लड़ रहे कैलाश को यदि समय से नहीं पहुँचाया गया होता तो अनहोनी हो सकती थी।

बेहद चिन्ताजनक बात है कि चिकित्सा क्षेत्र में पहाड़ अभी भी बहुत पीछे है। सरकार की ओर से लगातार दावे किये जाते रहे हैं कि दूरस्थ इलाकों में चिकित्सा सेवा के अलावा मरीजों को बेहतर व्यवस्था के इन्तजाम हैं लेकिन जिन लोगों पर बीत रही होती है वह जानते हैं कि किस प्रकार के हालात हैं। धारचूला की इस घटना पर घायल के परिजनों की ओर से व्यवस्था कर उन्हें बचा लिया गया वरना तो इस प्रकार के हादसे में ज्यादातर खतरा ही रहता है। बात सीमान्त क्षेत्र धारचूला की करें तो, यहाँ के निवासी हर बड़े पद पर बैठे हैं लेकिन शिक्षा-चिकित्सा की सेवाएं लचर बनी हुई हैं। जब धारचूला की स्थिति ऐसी है तो अन्य स्थानों के लिये कौन क्या कह सकता है।

पहाड़ से पलायन रोकने की बात होती है लेकिन इसके लिये सबसे जरूरी उपाय नहीं किये गये हैं। यदि शिक्षा-चिकित्सा जैसी मूलभूत व्यवस्था के ठोस इन्तजाम हो जाएं तो कौन नहीं चाहेगा अपने घर अपने पहाड़ में रुकें। शिक्षा और चिकित्सा के लिये अधिकांश लोग पहाड़ छोड़ते हैं। सरकार को स्वास्थ्य सेवाओं की ओर सबसे ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है ताकि बेमौत मारे जा रहे लोगों को सुरक्षा मिल सके।

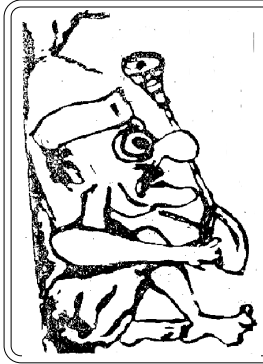

फसक

दाज्यू, कलजुग में मान-अपमान बराबर ठैरा

जब चल रही हो तो दूसरों को खूब जुत्याते रहते हैं बल

दाज्यू, रुद्रपुर में छोटे-बड़े नेता खूब चूं-चूं और थू-थू कर रहे हैं बल। किसी को कोई फर्क नहीं पड़ रहा है। वैसे भी कलजुग में मान-अपमान बराबर ठैरा। पूर्व विधायक ठुकराल कह रहे हैं- 'शहर का गला घोंटा जा रहा है। ठेला-फड़ लगाने वाले फैक्ट्रियों से चोरी करके मालामाल हो गये हैं। सत्ताधारी नेता के संरक्षण में अवैध वसूली हो रही है।' पूर्व मंत्री और किच्छा के विधायक तिलकराज बेहड़ भी रुद्रपुर की राजनीति को लेकर गुस्से में दिखाई दे रहे हैं। रुद्रपुर विधायक शिव अरोरा कह रहे हैं- 'चुनाव में हारे नेता झूठ बोलने लगे हैं। इनके संरक्षण में जुए के अड्डे चलते थे।' दाज्यू, सब गदरगोल मची है। जब चल रही हो तो दूसरों को खूब जुत्याते रहते हैं बल। कैसा पहाड़, कैसा उत्तराखण्ड कैसी देवभूमि? क्याप्प हो रहा ठैरा इस मैदान में। राजा रुद्रचन्द ने जिस तराई को बसाया वहाँ हो रही चकन्दरबाजी को देखकर मन रोता है। पहाड़ की बात करने वाले तो उदार होते हैं लेकिन यहाँ तो बालीबुड हो गया है बल। हल्द्वानी के एमबीपीजी कालेज में शिक्षा मंत्री के सामने ही एबीवीपी से जुड़े छात्रों ने हंगामा कर पोस्टर फाड़ डाले, तब से हमें यकीन हो गया है कि इस बार के छात्र संघ चुनाव में भी ये नेता फरफराट करेंगे। लोहाघाट में अपराधों में आयी तेजी और पुलिस पर निष्क्रियता का आरोप लगाते हुए लोगों ने प्रदर्शन किया। दाज्यू, गज्जब ही हो रहा ठैरा। नैनीताल में धामपुर बैंक के पास जंगल में दर्जनों हरे पेड़ कट चुके हैं।र ात को इलेक्ट्रानिक आरामशीन से पेड़ काटे गये बल। बनबसा के पूर्णागिरी इण्टर कालेज में कक्षाएं बदलने को लेकर प्रधानाचार्य और हिन्दी के शिक्षक भिड़ गये। चम्पावत में मंत्री रेखा आर्य के सामने ब्लाक प्रमुख और सीडीओ भिड़ गये। देहरादून में अपर सचिव ओमकार सिंह ने उत्तरकाशी जिला पंचायत अध्यक्ष पर धमकी देने का आरोप लगाया है। दाज्यू, चारों ओर गदर गोल हो रहा ठैरा। किस-किस को मनाया जाए? फर्जी जाति प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने के आरोप में महिला बाल विकास विभाग ने जसपुर में तैनात सीडीपीओ लक्ष्मी टम्टा की सेवाएं समाप्त कर दीं। दाज्यू, लक्ष्मी ने भी दाल-रोटी के जुगाड़ में गजबजाट कर दी थी बल। -तुम्हारा भुली झकरुवा

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

अशोक गर्ब्याल
असि.कमिश्नर
सेल टैक्स
बागेश्वर

कमला रावत
(पत्नी स्व.शेर सिंह रावत)
उत्तरांचल
विहार
हल्द्वानी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सुरक्षित रहें बांज के जंगल

डॉ. हरीश चन्द्र अण्डोला

पहाड़ का हरा सोना यानी बांज अब विलुप्ति के कगार पर है। वर्षा के पानी को अवशोषित कर भूमिगत करने वाले इन पेड़ों की कमी की वजह से धरती की कोख भी बांझ होती जा रही है। परिणाम यह है कि गैर हिमालयी नदियों से लेकर अधिकांश नौले व धारों में उम्मीद से कम पानी रह गया है। वैसे तो बांज की सभी छह तरह की प्रजातियां खतरे में हैं, लेकिन सबसे अधिक तीन प्रजातियां रयांस, फ्यांठ और मोरू का अस्तित्व नष्ट होने को है। खुद वन विभाग इस तरह के संकट से परिचित है। इसके बावजूद बड़े स्तर पर पहल नहीं नजर आ रही है। बांज, यह केवल वृक्ष प्रजाति ही नहीं, पारिस्थितिकी और आर्थिकी से जुड़ा प्रश्न भी है। 5000 फीट से अधिक ऊंचाई पर मिलने वाले बांज (ओक) के जंगल, जल संरक्षण के साथ ही तरह-तरह के बायोमास और विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बांज की पत्तियां पशुओं के लिए उत्तम चारा हैं तो खेती में कृषि यंत्रों के निर्माण में बांज की लकड़ी का उपयोग सदियों से हो रहा है। यही कारण है कि उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र में बांज वहाँ की संस्कृति से गहरे तक जुड़ा है। बावजूद इसके बांज पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। जंगल की आग तो खतरा है ही, बांज वनों में चीड़ (चिर पाइन) की दस्तक होने लगी है। इस दोहरी मार से पार पाने की चुनौती है। ऐसे कदम उठाने की आवश्यकता है, जिससे बांज के जंगल सुरक्षित रहें। इसमें सरकार और आमजन दोनों को आगे आना होगा। मानव-वन्यजीव संघर्ष थामने के दृष्टिगत पिछले 23 वर्ष से राज्य में विमर्श का दौर जारी है, लेकिन ठोस समाधान नहीं निकल पाया है। यद्यपि, संघर्ष थामने के उपायों की कड़ी में जंगलों में फलदार प्रजातियों के रोपण पर जोर दिया जा रहा है। इस दिशा में प्रयास भी हो रहे, लेकिन इनकी गति धीमी है। इस पहल के पीछे मंशा यही है कि यदि बन्दर, लंगूर जैसे जानवरों के लिए जंगल में फलों के रूप में भोजन की उपलब्धता होगी तो वे आबादी की

तरफ रुख नहीं करेंगे। इसके अलावा शाकाहारी वन्यजीव जंगल में रहेंगे तो मांसाहारी जानवरों के कदम भी बाहर नहीं निकलेंगे। यानी, जंगल की खाद्य श्रृंखला मजबूत रहेगी। अब जिस तरह से मानव-वन्यजीव संघर्ष गहरा रहा है, उसमें ऐसे प्रयासों को तेजी से गति देना आवश्यक है। उम्मीद की जानी चाहिए कि वन विभाग इस बार वर्षाकालीन पौधारोपण में फलदार प्रजातियों के रोपण पर ध्यान केन्द्रित करेगा। पर्यावरणविदों ने इसके लिए चिन्ता जाहिर की है और लगातार आवाज भी उठा रहे हैं। उनका कहना है, बांज की कुछ प्रजातियां रयांस, फ्यांठ व मोरू के बीज नहीं उग रहे हैं। इसके पीछे ग्लोबल वार्मिंग है या कोई अन्य वजह। इस पर वृहद स्तर पर शोध की आवश्यकता है। वन अनुसंधान केन्द्र के रेंजर ने माना कि पहले जंगलों में बांज के पेड़ अधिक दिखते थे। यही वजह थी कि धरती में नमी बनी रहती थी। स्रोतों से पानी भी निकलता था, लेकिन अब जंगलों में बांज की संख्या बहुत कम हो गई है क्षेत्रीय लोगों ने निजी उपयोग के लिए बांज का अन्धाधुन्ध कटान किया। यही कारण है कि बांज जंगलों से कम हो गया। इसकी पीड़ा लोकगीतों में भी झलकती है। लोकगीत- नी काटा झुमराली बांजा, बजांनी धुरा ठंडा पाणि यानी कि घने पत्तियों वाले बांज को मत काटो, इस जंगल का पानी बहुत ठण्डा है।

वन विभाग के अनुसार ही कुमाऊँ के पर्वतीय क्षेत्रों के जंगलों में 80 फीसद चीड़ है, जबकि तीन फीसद से कम बांज है। अध्ययन से भी यह साबित हो चुका है कि बांज के जंगलों से 23 फीसद जल संग्रहण होता है। इसके अलावा चीड़ से 16 फीसद, खेतों से 13 फीसद, बंजर भूमि से पांच फीसद और शहरी भूमि से केवल दो फीसद की वृद्धि होती है। अलग उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद सियासी नजरिए से यहाँ के वनों का खूब प्रचार हुआ। पहाड़ के नेता यहाँ मौजद वनों के एवज में ग्रीन बोनस की माँग करते रहे हैं। पहाड़ की सियासत में जल, जंगल और जमीन (सर्वदलीय और सार्वभौमिक नारा है। पर इनकी असल हालत से सभी नावाकिफ हैं। अलग राज्य बनने के बाद जल, जंगल और जमीन को संरक्षित रखने की दिशा में कोई ईमानदार जमीनी पहल कहीं से नहीं हुई। नतीजतन जल, जंगल और जमीन महज एक राजनैतिक मुद्दा बन कर रह गए हैं। उत्तराखण्ड राज्य में वन अधिकारियों की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ है, पर वनों की स्थिति पहले के मुकाबले और बदतर हो गई है। उत्तर प्रदेश में जहाँ एक प्रमुख वन संरक्षक पूरे प्रदेश की जिम्मेदारी संभालते थे, अलग राज्य बनने के बाद इस छोटे से प्रदेश में प्रमख एवं मख्य वन संरक्षक स्तर के करीब ढाई दर्जन आला अफसर हैं। इस छोटे से राज्य में भारतीय वन सेवा के तकरीबन एक सौ अधिकारी तैनात हैं। पर जमीनी स्तर पर कर्मचारियों की जबरदस्त कमी है। फील्ड के स्टाफ में कई दशकों से कोई इजाफा नहीं हुआ है। नतीजतन फील्ड स्टाफ की कमी के चलते साल भर वन सम्पदा का खूब अवैध दोहन होता है। गर्मियों की आग अवैध दोहन के सबूत नष्ट कर देती है। उत्तराखण्ड का वन विभाग वनीकरण के नाम पर सालाना करोड़ों रुपए खर्च करता है। दिलचस्प तथ्य यह है कि रोपे गए पौ ाों की सुरक्षा का कोई पुख्ता इन्तजाम नहीं है। जंगलात विभाग के आंकड़ों पर अगर यकीन किया जाए हेक्टेयर क्षेत्र लाख पौधे लगाए गए। दावानल के बाद इस कथित वृक्षारोपण की पुष्टि नहीं की जा सकती है। पहाड़ के जंगलों का बुरा हाल है। यहाँ जंगलों का वनावरण लगातार घट रहा है। वन भूमि सिमट रही है। वन सीमा पिलर तक गायब हो गए हैं। पर एयर कंडीशन कमरों में हरियाली और वन क्षेत्र कायम है। आखिर कब तक? जंगलों से आम आदमी का सदियों पुराना रिश्ता कायम किए बिना जंगलों को अवैध दोहन तथा आग और इससे होने वाले नुकसान से बचाना सरकार और वन विभाग के बूते से बाहर हो गया है। इस रिश्ते को बहाल करने के लिए सरकार और खुद वन महकमे को जंगलों के प्रति सम्वेदनशील होने और दिखने की जरूरत है। फ़िलहाल दूर-दूर तक इसके आसार नजर नहीं आ रहे हैं। (लेखक दून विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं।)

ओ इजा

ओ इजा
कस जमान आगो
चै चीज सबन
पर करन हुं क्वे तैयार नै रैगो
ओ बाबो बखतकि कि बात बतूं
मनख हर सामान मोल ल्हिण बैगो
दूध चानी सब
पर गोरु पालन हु तैयार नै
घर-गोंक अनाज भल बतूनी सब
खेति करन क्वे चान नै
साग पात फल फरूट
दाल आदि उगाव सरकार कूं
मगर बानर नक रोक तै
क्वे लै उपाय नै
नयी पीढ़ी सब बजारि है गयीं
जो घरन छन
कयी बात नलि पिती गई
नयी युगक असर दिखींण बैगो
त बैठिबेर खांणछैत
मैं लै क्या करूं?
सोचन लागो
हाइ राम! क्वे जै नै करलै कहै आल
मोल ली बेर कि-कि कदुक दिन खाल
ओ इजा, कै थै क्या कूंण जस नै
ओबाबो, आजि कस-कस देखण छु धै।

-दीवान सिंह कठायत

प्रिय नहीं आये

ऋतु वर्षा की, प्रिय नहीं आये,
मन के मेघ बहुत मंडराये।
हृदय के घाव बहुत है जलाये,
ठंडी बयार भी बुझा ना पाये।
जीवन का यह राग है कैसा?
व्यक्त इसे कोई कर ना पाये।
कोई मिटाए इस वेदना को,
इन घावों को कोई सहलाये ।
ऋतु वर्षा की.....
दर्द बहुत है दृग भर आये,
कौन है जो प्रिय से मिलवाये।
दु:ख देती है ये ठण्डी बयारें
जितनी बरसे अगन बढ़ाये।
ऋतु वर्षा की.....
भाग्य अपना तो रूठा बैठा,
वो आयें तो कुछ सुख पाये।
तब मिल पाये मन को सहारा,
ऋतु वर्षा भी प्यारी लागे।
ऋतु वर्षा की.....
सपने ढेरों संजोये बैठी,
साकार इन्हें कोई कर पाये?
सावन भादो की रुत 'कौस्तुभ'
जियरा झुलस-झुलस रह जाये।
ऋतु वर्षा की, प्रिय नहीं आये,
मन के मेघ बहुत मंडराये।

-कौस्तुभ आनन्द चन्दोला

मेरो मन रंगीलो

मेरो मन रंगीलो, मेरो तन रंगीलो। मेर दिल क हर बात रंगीली।
मेरो गीत रंगीलो, मेरो संगीत संगीलो। गीत की तरंग में हमार मन ले रंगीलो।
मेरो घर रंगीलो, मेरो परिवार रंगीलो। परिवार क हर मैस रंगीलो।.....
मेर बाबू रंगीला, मेरी ईजा ले रंगीली। उन हर बात रंगीली।
मेर ढुल बौल्यू रंगीला, मेरी काखी रंगीली, उन परिवार क हर बच्च रंगीले।
मेरो दाद रंगीलो मेरी भौजी रंगीली, मेरी दीदी रंगीली मेरा भिन्जु रंगीला,
मेर घरा क घरवाला रंगीला, उनर घरवाली औरे रंगीली।.....
मेरी सासु रंगीली, मेरो सौरज्यु रंगीला। मेरी जिठाणी रंगीली ज्यूठ्ज्यू रंगीला।
मेरी दयोराणी रंगीली, मेरा देवर रंगीला। उन सब बाल बच्च रंगीला।.....
मेरो खेत रंगीलो, मेरो बगीच रंगीलो। मेरी जमीन वि हर हर उपज रंगीलो।
मेर गाड़ गध्यार रंगीला, मेरी गंगा की धार रंगीली, मेरी गंगा की धार रंगीली।
मेर गौ पड़ोसी रंगीला, मेरा गौ वाल रंगीलो, हम गौं की कारोबार रंगीला।
मेरो पहाड़ क डानकान रंगीलो, मेरा पहाड़ क बर्फ सुकिलो।
मेरो कुमाऊँ रंगीलो, मेरो गढ़वाल रंगीलो, मेरी देवभूमि उत्तराखण्ड रंगीलो।
मेरो देश भारत रंगीलो, हर देशवासी रंगीलो।.....

-नन्दा बल्लभ पाण्डेय

ज्योतिष की बातें - 138

7 अगस्त 2023 को शुक्र वक्र गति से चलते हुए सिंह राशि से निकलकर वापस कर्क राशि में आ जाएगा। वहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं होगी। फलदीपिका के अनुसार शुक्र छठवें, सातवें व दसवें स्थान पर अशुभ होता है अन्य स्थानों पर शुभ फल प्रदान करता है। अत: अगले 56 दिन शुक्र भौतिक सुख आदि अपने कारक विषयों में कर्क, मिथुन, वृषभ, मेष, मीन, धनु, वृश्चिक, कन्या व सिंह राशि के जातकों को अल्प मात्र में ही शुभ फल प्रदान करेगा। शेष तीन राशियों कुम्भ, मकर व तुला के जातकों को अभी धैर्य रखना चाहिए।

परमा एकादशी- पुरुषोत्तम मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को परमा एकादशी कहते हैं। शनिवार 12 अगस्त 2023 को परमा एकादशी का व्रत रखा जाएगा। अधिकमास अर्थात् पुरुषोत्तम मास की दोनों एकादशियों का अत्यधिक महत्व होता है। शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 29

वर्षा ऋतु अर्थात बाढ़ का मौसम

आजकल इस तरह के समाचार बहुत आ रहे हैं जैसे कि नदियाँ खतरे के निशान से ऊपर, चार सौ गाड़ियाँ बाढ़ में बह गईं, कालोनी में पानी भर गया, सड़कों पर नाव चल रही हैं, सैकड़ों एकड़ फसल डूब गई, रेल की पटरियों पर पानी होने से ट्रेन स्थगित, पहली मंजिल तक पानी, बरसात के कारण इतने लोगों की मौत, बाढ़ से हाहाकार। कोई ना कोई रिकॉर्ड भी बरसात का रोज टूटता रहता है, कभी दस साल का, कभी पचास साल का, कभी सौ साल का।

अब प्रश्न यह उठता है कि पहले बरसात कम होती थी क्या? जब की पहले जमाने में बरसात, जैसा कि लोग कहते हैं, अधिक होती थी लेकिन जनहानि, धनहानि आजकल की तरह नहीं होती थी। खेतों तक पानी आ जाने से किसान खुश होते थे क्योंकि उसके बाद फसल अच्छी होती थी।

मेरे विचार से बाढ़ का मुख्य कारण है जल के स्वाभाविक प्रवाह में व्यवधान पैदा करना। यह दो प्रकार से होता है नदी पर बड़े-बड़े बाँध बनाकर और तालाबों के स्थान पर बड़ी-बड़ी कालोनियाँ बसाकर। जब बांध भर जाने पर अचानक बांध के कपाट खोलने पड़ते हैं तो नीचे के स्थानों में बाढ़ की विभीषिका उत्पन्न होती है। वास्तव में यह बाढ़ नहीं है। मेरे शब्दों में पानी अपने स्वतन्त्र विचरण के स्थानों को, जहाँ पर मनुष्यों ने अतिक्रमण कर रखा है उसको, पुन: अपने अधिकार में लेता है। कॉलोनी में पानी भर गया इसका अर्थ होता है कि पानी ने अपने तालाब वापस लिए आदि आदि।

-सरल

देवीधुरा बग्वाल मेले की तैयारियां

चम्पावत। माँ बाराही धाम देवीधुरा में होने वाले बग्वाल मेले की तैयारियां तेज हो चुकी हैं। मन्दिर कमेटी के अध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट ने बताया कि पिछली बार की ही तरह ही इस बार भी पुरानी घंटियों को पिघलाकर एक समान आकार लगभग 80 से 100 घंटियां बनाई गई हैं, जिन्हें खोलीगाड़ दूबाचौड़ मैदान में लगाने का काम पूर्ण हो चुका है। इनमें एक घण्टी का वजन लगभग 9-10 किलो है। जल्द ही अब मन्दिर परिसर में होने वाली रंगाई पुताई का कार्य शुरु हो चुका है। उन्होंने कहा कि चारों खामों और सात थोक के लोगों को बग्वाल खेलने के दौरान ड्रेस कोड में आना अनिवार्य होगा। लमगड़िया खाम का पीला रंग, वालिक खम सफेद, चम्याल खाम को गुलाबी और गहड़वाल खाम का लाल रंग होगा। मीडया प्रभारी दीपक बिष्ट परिवर्तन ने भी तैयारियों की सूचना दी है

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रुपसियाबगड़ में होगा बिजली उत्पादन

मुनस्यारी। उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम लि0 की बैठक में रुपसियाबगड़ सिरकारी भ्योल 120 मेगावाट परियोजना की डीपीआर स्वीकृत हुई है। इसे शासन से स्वीकृति का इन्तजार है। निगम के अधिशासी अभियन्ता उमेश जोशी ने बताया कि 879.43 लाख रुपये की इस परियोजना में 40 मेगावाट की तीन टरबाइन लगाई जाएंगी। इसमें प्रतिवर्ष 529.12 मिलियन यूनिट बिजली उत्पादन होगा।

कुलपति करेंगे वरिष्ठता निर्धारण

नैनीताल। हाईकोर्ट ने डीएबी कालेज देहरादून के याचिकाकर्मा प्राध्यापकों की वरिष्ठता का निर्णय गढ़वाल विवि के कुलपति को लेने का आदेश दिया है। सुनवाई करते हुए कोर्ट ने वरिष्ठता के मामले में पूर्व के आदेश, जिसमें प्राचार्य को निर्णय लेने के लिये अधिकृत किया था, उसे वापस ले लिया।

गबन आरोपी पोस्ट मास्टर पर केस

गंगोलीहाट। पोस्टआफिस के ग्राहकों की सूचना पर पुलिस ने पाताल भुवनेश्वर के पोस्ट मास्टर के खिलाफ केस दर्ज कर जाँच शुरू कर दी है। पोस्टमास्टर गायत्री दशोनी ने उन पर लगे आरोप निराधार बताते हुए कहा है कि कुछ लोग उन्हें फंसाने की कोशिश कर रहे हैं। फिलहला विभागीय जाँच शुरु हो चुकी है।

गौलापार जमीनों के सौदों पर पाबंदी हो

हल्द्वानी। हाईकोर्ट गौलापार आने की खबर के बाद से क्षेत्र में जमीन के सौदागरों की नज़र है। ऐसे में क्षेत्र के जागरुक जनों ने जमीनों के सौदों पर पाबन्दी की मांग की है। जिला विकास प्राधिकरण की संयुक्त सचिव ऋचा सिंह को ज्ञापन सौंपते हुए कहा है कि जमीनों की खरीद फरोख्त के लिये रजिस्ट्री व खतौनी पंजीयन में रोक लगाई जाए।

मसूरी में पर्यटकों की संख्या सीमित करने की सिफारिश

मसूरी। वाहन क्षमता का अध्ययन करने के लिए राष्ट्रीय हरित अभिकरण (एनजीटी) द्वारा नियुक्त पैनल ने पहाड़ों की रानी मसूरी में पर्यटकों की संख्या सीमित करने की सिफारिश की है। इसके लिये पर्यटकों पर टैक्स लगाकर नियन्त्रण करने का उपाय बताया है। जोशीमठ में आए भूधंसाव के संकट को मसूरी के लिए चेतावनी बताने वाली एक सूचना को ध्यान में रख एनजीटी ने मसूरी की वाहन क्षमता का अध्ययन करने के लिये पैनल का गठन किया था। इस पैनल ने अपने अध्ययन में कहा कि उत्तराखण्ड का सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थल मसूरी है।

गंगावली जिले की फिर से मांग

चुनाव से पहले यह

गंगोलीहाट। लोकसभा व निकाय चुनाव से पहले गंगावली जिले की मांग उठाई गई है। तर्क दिया जा रहा है कि यहाँ सर्वाधिक अनुसूचित जाति बहुल लोग रहते हैं।

बताते चलें कि गंगावली जिले की मांग को लेकर पहले वृहद आन्दोलन चला था। क्षेत्रवासियों ने पूरे जोर के साथ बेरीनाग व गंगोलीहाट जिले की मांग को लेकर प्रदर्शन किया और क्षेत्र की तमाम समस्याओं को उठाया था। बाद में हनेरा के गणेश बोरा इस अभियान में बहुत ही जबर्दस्त तरीके से जुटे रहे और सम्पूर्ण क्षेत्र में आयोजनों के अलावा लोगों को एकजुट करने में सक्रिय थे। वह आज तक भी बीच-बीच में इस अभियान की याद दिलाते रहते हैं। इस बीच पर्चे बांटकर गंगावली जिले की बात को कई जागरुक लोगों ने उठाया। अब गंगावली जिला बनाओ संघर्ष समिति ने तहसीलदार के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा है। समिति का कहना है कि सरयू और रामगंगा से गंगावली क्षेत्र लगा है और यहाँ सर्वाधिक अनुसूचित जाति बहुल के लोग रहते हैं। यहाँ से जिला मुख्यालय की दूरी 77 किमी है, लोगों को अपने आवश्यक कार्य हेतु 5 घण्टे का समय लगाना पड़ता है। ज्ञापन प्रेषित करने वालों में कृष्ण सिंह बोहरा, दर्पण कुमार, ललित पाठक, ललित उप्रेती रहे।

गंगावली की मांग कितने ठोस तरीके से उठाई जा रही है यह चुनाव के मौके पर दिखाई देगा क्योंकि 90 के दशक में यह मांग चरम पर थी।

नेता और अधिकारी की रार

खटीमा रेंज में पेड़ कटान मामला

टनकपुर। टनकपुर-बनबसा के बीच खटीमा रेंज के जंगल में तस्करों ने दो दर्जन से अधिक खैर के पेड़ काट डाले। मामले की चर्चा गरम है। आँखिर पेड़ कटने तक विभाग कहाँ सोया था। इस पूरे प्रकरण के अलावा नेता और वन अधिकारी के बची रार की भी कम चर्चा नहीं है। कुछ समय पहले ही लकड़ी तस्करों और वन कर्मियों के बीच मुठभेड़ का मामला भी सामने आया था। मामले में वन बीट अधिकारी ने बनबसा थाने में एक नामजद व अन्य अज्ञात के खिलाफ तहरीर दी थी। सवाल कई खड़े हो रहे हैं।

ग्रामीण भी जंगल चोरी की इस घटना से हैरान हैं। उनका कहना है कि जिस क्षेत्र में वन कर्मियों की गश्त रहती है वहाँ से भी इस प्रकार हरे पेड़ कट गये तो अन्य जगह क्या हो रहा होगा। रेंजर महेश चन्द्र जोशी ने कहा है कि खैरानी के जंगल से पेड़ों के अवैध पातन की जानकारी नहीं है। यदि किसी प्रकार का मामला पता चलता है तो जाँच करवाई जाएगी और वन सम्पदा से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं होगा।

भाजपा नेता दीप पाठक का कहना है कि इसकी जानकारी उनके द्वारा एक माह पूर्व डीएफओ को दी थी लेकिन किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं हुई है। श्री पाठक का कहना है कि बना मिलीभगत के इतनी बड़ी चोरी नहीं हो सकती। यदि इसकी जाँच हो जाए तो साफ पता चल जायेगा कि किस प्रकार से जंगल चोरी किये जा रहे हैं।

खटीमा रेंज में वन चोरी का प्रकरण गम्भीर मामला है लेकिन यह भी देखना होगा कि नेता और अधिकारी के बीच झगड़े का सच क्या है?

नीति आयोग की भांति सेतु आयोग

देहरादून। प्रदेश में नीति आयोग की भांति स्टेट इंस्टीट्यूट फार एंपावरिंग एवं ट्रांसफार्मिंग उत्तराखण्ड (सेतु) का गठन हो चुका है। इसके अन्तर्गत सभी प्रकोष्ठ सेतु में समायोजित किए जाएंगे। इसका ढांचा त्रिस्तरीय का होगा। इसके अन्तर्गत नीतिगत निकाय, प्रशासनिक निकाय एवं विशेषज्ञ एवं तकनीकी निकाय बनाए गए हैं।

तीन मंजिला भवन निर्माण से नाराज

रुद्रप्रयाग। केदारनाथ धाम में पुनर्निर्माण कार्यों के तहत हो रहे तीन मंजिला भवन निर्माण पर तीर्थ पुरोहितों ने नाराजगी जताई है। उनका कहना है कि भवनों के मंजिल बढ़ाने से यह केदारनाथ मन्दिर से भी ऊँचे हो जाएंगे और मन्दिर ढक जायेगा। उन्होंने चेतावनी दी है यदि निर्माण का प्लान नहीं बदला तो आन्दोलन होगा

नमामि गंग के एसटीपी का आडिट

चमोली। नमामि गंगे के सीवरेज सोशन प्रोजेक्ट में हुए भीषण हादसे के बाद राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन देश के दस राज्यों में एसटीपी का आडिट करने जा रही है। महानिदेशक अशोक कुमार ने इसके निर्देश दिये हैं।

सितम्बर में महिला होमगार्ड भर्ती है

प्रदेश की बालिकाओं के लिये खुश खबरी है कि सितम्बर माह में महिला होमगार्ड भर्ती होगी। पहली सितम्बर से दस जिलों में 330 महिला होमगार्ड के पदों पर भर्ती शुरु की जायेगी। इसमें से 10 प्लाटॅन कमाण्डर के पद भी होंगे। इसके लिये जारी विज्ञापन के अनुरूप दक्षता परीक्षा की तैयारी करनी है।

कमाण्डेंट जनरल होमगार्ड केवल खुराना ने बताया है कि पिछले साल मुख्यमंत्री ने महिला होमगार्ड सम्बन्धी घोषणा की थी। इस भर्ती के बाद सभी तेरह जनपदों में महिला होमगार्ड की एक-एक प्लाटून हो जाएगी। 330 पदों में से 320 होमगार्ड और 10 प्लाटून कमाण्डर के होंगे। इस बार भर्ती प्रक्रिया में संशोधन भी किया गया है। भर्ती के लिये होमगार्ड कमाण्डेंट की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय समिति चयन करेगी।

बताया गया है कि पहले चरण में टिहरी, उत्तरकाशी, पौड़ी, चमोली, बागेश्वर और उधमसिंह नगर में भर्ती प्रक्रिया होगी। इसके बाद पिथौरागढ़, चम्पावत और रुद्रप्रयाग में प्रक्रिया शुरु की जायेगी। कुल 60 अंकों की यह परीक्षा होगी।

परिक्रमा

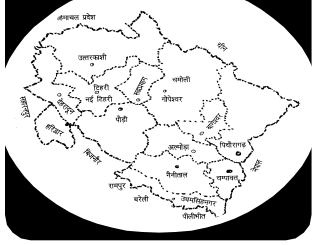

पड़ोसी की एनओसी पर कुत्ता पालो

रुद्रपुर। नगर निगम ने कहा है कि यदि शहर में कोई कुत्ता पाल रहा है तो उसे अपने पड़ोसियों से अनओसी लेनी होगी और पंजीकरण और नियमानुसार नवीनीकरण करवाना होगा। असल में शहर में हजारों की संख्या में कुत्ते पल रहे हैं लेकिन नगर निगम में सिर्फ 37 का ही पंजीकरण है। लोग अपने पालतू कुत्तों द्वारा जगह-जगह घुमाते हुए गन्दगी कर रहे हैं।

नैनीताल में भी लगेगा जुर्माना

नैनीताल में बिना अनुमति के कुत्ता पालने वालों पर अब जुर्माना लगेगा। नगर पालिका के ईओ ने बताया कि हाईकोर्ट के निर्देश और पालिका एक्ट के तहत कुत्ता पालने के लिये लाइसेंस लेना अनिवासर्य है। जिन लोगों ने अब तक लाइसेंस के लिये आवेदन नहीं किया है वह शीघ्र लाइसेंस के लिये आवेदन कर दें।

अतरपंडा और रुद्रपंडा जलाशय

सूखीढांग-श्यामलाताल में लेक ट्रेल

चम्पावत। जनपद के सूखीढांग-श्यामलाताल क्षेत्र में लेक ट्रेल विकसित की जायेगी। जिसके तहत श्यामलाताल झील के साथ ही इसके आसपास के दो प्राकृतिक लजाशय अतर पण्डा और रुद्रपण्डा को पर्यटन ग्रिड से जोड़ा जायेगा। इसके लिये पर्यटन विभाग की ओर से विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

सिंचाई विभाग की ओर से श्यामला ताल झील के किनारे पर्यटकों के घूमने के लिये मार्गीय सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी। इसके अलावा पर्यटन विभाग की ओर से झील के समीप ही अतरपण्डा व रुद्रपण्डा जलाशय में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये बैंड स्टैंण्ड के साथ ही ओपन थियेटर और कैफेटेरिया का निर्माण किया जायेगा।

बताया जा रहा है कि करीब चार किमी की परिधि विकसित किये जाने से लेक ट्रेल के विकसित होने पर्यटक गतिविधियों तेजी से बढ़ेंगी। जिला पर्यटन विकास अधिकारी अरविन्द गौड़ अरविन्द गौड़ ने बताया है कि विभाग की ओर से स्वदेश दर्जन योजना में श्यामलाताल झील के साथ ही आसपास की दो अन्य प्राकृतिक झीलों को लेकर लेक ट्रेल विकसित किया जायेगा। इससे पर्यटकों की आवत के साथ ही स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन होगा।

मेले त्यौहार के बारे में भी

राज्य आन्दोलन का इतिहास पढ़ेंगे

प्रदेश के सरकारी स्कूलों में उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन का इतिहास और यहाँ के प्रमुख त्यौहार, मेले, उत्सवों के बारे में भी पढ़ाया जायेगा। शिक्षामंत्री धन सिंह रावत के निर्देश पर विभाग की ओर से विरासत नाम से पुस्तक तैयार की जा रही है। इसके लिये राज्य के सभी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों से जानकारी मांगी गई है। शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह कहते हैं- छात्र-छात्राओं को स्थानीय बोली, भाषा की जानकारी के लिये प्राथमिक स्तर पर उन्हें कुमाउंनी गढ़वाली और जौनसारी में पढ़ाया जा रहा है। एससीईआरटी की ओर से कक्षा से तीन तक के बच्चों के लिए पुस्तकें तैयार की गई हैं। जबकि माध्यमिक स्तर पर छात्र राज्य के इतिहास, भूगोल, रीति रिवाज, प्रमुख त्यौहार, मेले, उत्सव, राज्य आन्दोलन के इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम में राज्य के लोगों की भूमिका और राज्य के प्रसिद्ध लोगों के बारे में पढ़ेंगे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चलबलाट करते नेता और छलबलाट करती राजनीति

उत्तराखण्ड क्रान्ति दल का दम घोटकर ही मानेंगे!

पि.हि.प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना को लेकर जिस दल के बैनर तले आवाज बुलन्द हुई थी, वही दल इसके अपनों से दलदल बना और ताजा चलबलाट में एक बार फिर से दो फाड़ हो गये। यूकेडी की ताकत थी जब इसके चार विधायक सदन में पहुँचे थे लेकिन पहाड़ी राज्य बनाने वाला दल गला घोटने वाले इसके अपने ही हैं। लगता है यह लोग इसका गला घोटकर ही मानेंगे।

दल के सर्वमान्य नेता और जनता के बीच लोकप्रिय काशीसिंह ऐरी इस समय सबसे अनुभवी के रूप में हैं लेकिन उनकी भी नहीं सुनी जा रही है। उक्रांद का संगठन मजबूत करने के बजाय इसमें जुड़कर तमाशा करने वाले सक्रिय हो रहे हैं। ऐसे में आम जनता जो इस दल के लिये श्रद्धा रखती है वह निराश है। कुछ समय पहले हल्द्वानी में यूकेडी नेताओं के बीच घमासान मचा था और दूसरा बड़ा घमासान देहरादून में हो गया। पार्टी के स्थापना दिवस पर निष्कासित हुए नेताओं के आने से हंगामा हो गया। ऐरी और दिवाकर भट्ट सहित तमाम नेताओं की उपस्थिति में स्थापना दिवस समारोह में जिस प्रकार का हंगामा पार्टी मुख्यालय में हुआ वह सीधा सा संकेत है कि क्षेत्रीय पार्टी जो कमजोर हो चुकी है, उसे पूरी तहत तोड़ने की कोशिश जारी है। निष्कासित गुट के शिवप्रसाद सेमवाल अपने समर्थकों के साथ पार्टी मुख्यालय में घुसकर नारेबाजी करने लगे, जिन्हें हंगामे के बाद पुलिस ने हिरासत में ले लिया।

पहली बार ऐसा हुआ है कि जिस क्षेत्रीय पार्टी को देखकर पुलिस व प्रशासन भी सोच-विचार कर कदम उठाता था, आज उसके मुख्यालय में पुलिस का पहरा लगाना पड़ा और हंगामा करने वालों को हिरासत में लिया गया। यूकेडी भले ही सत्ता में भागीदारी नहीं बन पा रहा है लेकिन पहाड़ की ताकत के रूप में इसकी मान्यता है। इसकी ताकत को देखते हुए बहुत से ऐसे लोग भी इससे जुड़ चुके हैं जो अपना या अपने कारोबार का बचाव चाहते हैं। संगठन मजबूती की ओर किसी का ध्यान नहीं है। दल की ताकत और इसकी प्रवृत्ति के अनुसार इसे नहीं संभाला गया तो यह घुट जाएगा।

रुद्रपुर में गुंडाराज का आरोप और गुर्राने की राजनीति

पि.हि.प्रतिनिधि

तराई में राजनीति की नई चाल शुरु हो चुकी है। इसके लिये बड़ा प्रयोग महानगर रुद्रपुर से शुरु हो चुका है। फिलहाल तो विधायक और पूर्व विधायक के बीच जमकर मुंहजोरी हो रही है। एक-दूसरे पर गुण्डाराज का आरोप लगाने के अलावा तमाम तरह के भ्रष्टाचार के लिये आरोपी बताया जा रहा है। सोशल मीडिया पर एक-दूसरे की भद कूटने के लिये जितने उपाय नेताओं द्वारा किये गये हैं उससे यह तो साफ लगने लगा है कि बदमाशी वास्तव में होती रही है। अपने पद का दुरुपयोग करने वाले किसी भी हद जा सकते हैं। इनके राज में गलत कार्य होते रहे हैं। यदि ढंग से जाँच हो जाए तो कई घपले उजागर हो जायेंगे। आरोप लगाते हुए गुर्राने वाले नेताओं का संयम टूट चुका है और वह ताकत दिखाने लगे हैं। ऐसे में राजनीति के समीकरण बनाने की युक्ति भी चली जा रही है।

पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल और वर्तमान विधायक शिव अरोरा के बीच जिस प्रकार की जुवानी जंग इन दिनों चल रही है वह एक-दूसरे की पोल खोल रही है। ठुकराल भाजपा में रहे हैं और इस बार टिकट न मिलने पर निर्दलीय चुनाव लड़े थे। पहली बार विधायक बने भाजपा नेता शिव अरोरा शुरु से ही अपने तेवर दिखा चुके हैं। इन दोनों नेताओं ने जिस प्रकार से बातों को कहना शुरु किया है उसमें कोई शक नहीं कि तराई में बहुत गड़बड़ हुई है। पहाड़ विरोधी नेता यहाँ के प्रतिनिधि बनकर घपलत में लिप्त रहे हैं। अपने स्वार्थ के लिये पार्टी बदलने का रिवाज भी यहाँ है। विधायक शिव अरोरा की पकड़ देखते हुए दबंग नेता ठुकराल बेचैन हो चुके हैं। वह पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत से भी मुलाकात कर चुके हैं। श्री रावत की पत्रकार वार्ता में अचानक ठुकराल पहुँच गये थे। भाजपा और विधायक के साथ उनकी खटास इन दिनों खुलकर है, ऐसे में कांग्रेस नेता रावत के पास जाना राजनीति खेल ही है।

रानीखेत को-ऑपरेटिव ड्रग फैक्ट्री अब दिल्ली की कम्पनी चलाएगी

सत्तर साल पुरानी फैक्ट्री बदहाल हो चुकी थी

पि.हि.प्रतिनिधि

रानीखेत। देशभर में विख्यात रानीखेत ड्रग फैक्ट्री अब निजी हाथों में चली गई है। 70 साल पुरानी रानीखेत को-ऑपरेटिव ड्रग फैक्ट्री लगातार अपनी बदहाली से डूबती जा रही थी। इसमें सेवानिवृत्त कर्मचारियों की जगह नए कर्मचारी नहीं रखे जा रहे थे। आयुर्वेदिक औषधियों के लिये जड़ी-बूटी उत्पादन पर ध्यान नहीं दिया गया। इस फैक्ट्री को घाटे से उबारने के लिये कई बार कर्मचारी कहते रहे लेकिन इस ओर कोई गम्भीरता से नहीं जुटा। ऐसे में यही सब होना था जो हो चुका है। दिल्ली की बिजनेस प्रोवाइड कम्पनी ऑर्डर मिलने पर च्यवनप्राश, अशोकारिष्ट, त्रिफला जैसी आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण करने जा रही है। ड्रग फैक्ट्री के प्रबन्धक राजा राम ने बताया है कि विभागीय मुख्यालय में निविदाएं आमंत्रित कर मंगलम बायोटिक को बिजनेस प्रोवाइडर के रूप में नियुक्त किया गया है। कम्पनी संस्थाओं के टेंडर में भाग लेगी और यहाँ दवा बनाएगी। अस्पताल से कम्पनी को दवा का ऑर्डर मिल भी चुका है। इसमें फैक्ट्री को लाभ होगा।

उल्लेखनीय है कि भारत रत्न पं. गोविन्द बल्लभ पन्त ने वर्ष 1954 में गनियाद्योली में केसीडीएफ की भूमि पर ड्रग फैक्ट्री की स्थापना की थी। फैक्ट्री के पास ही भेषज विकास संघ की भूमि पर जड़ी बूटियों का उत्पादन होता था। इसमें विभिन्न बीमारियों के लिये 200 प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों से दवाईयां बनाई जाती थीं। शासन-प्रशासन की उदासीनता इस फैक्ट्री पर इतनी भारी पड़ी की ताले लगने लगे, कर्मचारी घटते चले गये और अब जाकर इसे निजी हाथों को सौंपना मजबूरी हो गया। पृथक पर्वतीय राज्य बनने के बाद एक बार उम्मीद जगी थी कि शायद जनप्रतिनिधि इस ओर ध्यान देंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जड़ी-बूटियों के लिये बाहरी राज्यों पर निर्भर होना पड़ा था।

चौमास खरियौट...

प्रथम पृष्ठ का शेष

जीवन- जीना अत्यधिक दुभर हो जाता है नदी-नाले, पेड़ -पौंधे, पहाड़ की चोटी स्थिर अवस्था में नहीं है कभी भी, कहीं भी कुछ हो सकता है।

कभी वर्षाऋ तु के सौन्दर्यता का अपना मिजाज होता था। धान के खेतों में रोपाई लगाते लोकगीत के धुन पर लोकजीवन का आनन्द, कीचड़ से सना खेत, देवर-भाभी के द्वारा कीचड़ से मजाकिये लहजे में एक-दूसरे पर गीली कीचड़ उछालना पहाड़ के जीवन शैली का दर्शन कराता था।

आज पहाड़ के चोटी, जड़-जंगल की हालत खस्त हो चुका है। अवैज्ञानिक तरीके से किये गये प्राकृतिक संसाधनों का दोहन से भू-स्खलन, जमीन धंसना, पहाड़ का गिर जाना, नदी में बाढ़ जैसे स्थिति कितने गाँव, कस्बों को जमींदोज करते जा रहा है।

वर्षाकाल आते ही लोगों के रूह कांपने लगतह है कि किस ओर से आपदा आ जाए। जहाँ बादल फटा नहीं, उजाड़ते चला गया। नदी, नाले, पहाड़ का भयावह रौद्र रूप आज से तीस-चालीस वर्ष पूर्व ऐसा नहीं दिखाई देती थी।

उस जमाने को भी लोगों द्वारा देखा होगा, जब चुपचाप सतझर (सात दिनों तक रात-दिन बारिश होती थी) जिसका अहसास भी नहीं होता, न कोई चेतावनी न कोई आपदा प्रबन्धन टीम, घटना होती थी पर बहुत कम।

दादी की खिन्नता जिस कारण दिखाई देती है उसमें भागीदारी मानव कृत कार्य का अधिक है। जिसकी रोकथाम वर्षा ऋतु के सौन्दर्यता को बचाये रखना आवश्यक है।

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hayat Paradise
Bus Station Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

एन्जिल एकेडमी
कपकोट (बागेश्वर)
प्रबधक- भारत सिंह गड़िया

पुष्पराज गर्ब्याल
जजफार्म
हल्द्वानी

भूपेन्द्र पांगती
वस्त्र विक्रेता
खड़ी बाजार, थल

दीनदयाल सिंह पांगती
अधीक्षण अभियन्ता, विद्युत वितरण
खण्ड, ग्रामीण, हीरानगर, हल्द्वानी

भूपाल आर्या
सामाजिक कार्यकर्ता
ट्रेजरी लाइन, गंगोलीहाट (पिथौरागढ़)

कुलपति रावत ने दोहराया संकल्प

नैनीताल। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के नये कुलपति दीवान सिंह रावत ने फिर से संकल्प दोहराया है कि विवि को देश के प्रथम सौ उच्च शिक्षण संस्थानों की सूची में लाना उनका लक्ष्य है। प्रो.रावत ने कुलपति का पदभार संभालने के बाद से लगतार विवि की तकनीकी व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए इसे पटरी पर लाने को कहा है। इस बीच विवि की तमाम समस्याओं को लेकर विवि कर्मचारी महासंघ के पदाधिकारियों ने भी कुलपति से भेंट की।

गर्भवती के होटल का खर्च सरकार का

अल्मोड़ा। आपदाकाल में गर्भवतियों को प्रसव से दस दिन पूर्व अस्पताल पहुंचाना होगा। यदि अस्पताल में उनके ठहरने की पर्याप्त जगह नहीं है तो वे आसपास के होटल में ठहर सकती हैं जिसका खर्च सरकार वहन करेगी। जिला भ्रमण पर पहुंचे स्वास्थ्य मंत्री डॉ.धनसिंह रावत ने यह बात कही। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य विभाग ने ऐसी गर्भवतियों को चिन्हित किया है जिनका आपदाकाल में प्रसव होना है।

पूर्व पालिकाध्यक्ष खाती को नोटिस

पिथौरागढ़। पूर्व नगर पालिकाध्यक्ष जगत सिंह खाती को शरदोत्सव में धन के अनियमित व्यय के मामले में शासन से वसूली का नोटिस जारी हुआ। शहरी विकास के अपर सचिव की ओर से उन्हें 35 लाख रुपये दस दिन के भीतर जमा करने के निर्देश दिये गये हैं। कहा गया है कि प्रदर्शनी में विश्राम गृह, टूरिस्ट लॉज, दुकानों के निर्माण के लिये प्रीमियम के रूप में एकत्रित 86 लाख की राशि में से 35 लाख रुपये एकल हस्ताक्षर से अनियमित व्यय किये गये हैं।

सप्ताह के पर्व

श्रावण कृष्ण पक्ष

1 अगस्त- पूर्णिमा
4 अगस्त- गणेश चतुर्थी
11 अगस्त- एकादशी
15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)